॥ भैरव जी की आरती ॥

Bhairava Ji Ki Aarti

जय भैरव देवा प्रभु जय भैरव देवा ।
जय काली और गौरा देवी कृत सेवा ॥ जय ॥

तुम्ही पाप उद्धारक दु:ख सिन्धु तारक ।
भक्तों के सुख कारक भीषण वपु धारक ॥ जय ॥

वाहन श्वान विराजत कर त्रिशूल धारी ।
महिमा अमित तुम्हारी जय जय भयहारी ॥ जय ॥

तुम बिन सेवा देवा सफल नहीं होवे ।
चौमुख दीपक दर्शन सबका दु:ख खोवे ॥ जय ॥

तेल चटकि दधि मिश्रित भाषावलि तेरी ।
कृपा करिये भैरव करिये नहीं देरी ॥ जय ॥

पाव घूंघरु बाजत अरु डमरु डमकावत ।
बटुकनाथ बन बालकजन मन हरषावत ॥ जय ॥

बटुकनाथ की आरती जो कोई नर गावे ।
कहे धरणीधर नर मनवांछित फल पावे ॥ जय ॥

॥ इति भैरव आरती सम्पूर्णम ॥